

यूसुफ़ मेहर अली और 1942 का भारत छोड़ो आंदोलन: नेतृत्व, नारा और नागरिक प्रतिरोध की ऐतिहासिक पड़ताल

डॉ. संजय कुमार सहनी

सहायक प्राध्यापक, इतिहास विभाग

सब डिविजनल गवर्नमेंट डिग्री कॉलेज, बेनीपुर, दरभंगा

सार

भारत छोड़ो आंदोलन, 1942 भारतीय राष्ट्रीय आंदोलन का अंतिम और सबसे उग्र जन-उभार था। इस आंदोलन के इतिहास-लेखन में गांधी, नेहरू, पटेल, जयप्रकाश नारायण, अरुणा आसफ़ अली और राम मनोहर लोहिया के नाम प्रमुखता से आते हैं, जबकि यूसुफ़ जाफ़र मेहर अली की भूमिका प्रायः 'भारत छोड़ो' नारे के कथित प्रस्तावक के रूप में एक पंक्ति तक सिमट जाती है। यह आलेख उपलब्ध प्राथमिक एवं द्वितीयक साक्ष्यों के आधार पर उनके योगदान का पुनर्मूल्यांकन करता है। 1942 की पूर्व-संध्या पर गांधी के लेखों के संकलन 'Quit India' का उनके प्रकाशन-गृह से छपना, महापौर के रूप में उनकी सार्वजनिक स्थिति तथा समाजवादी युवा नेतृत्व के निर्माण में उनकी भूमिका प्रलेखित तथ्य हैं। उनका वास्तविक महत्त्व गांधीवादी जनांदोलन, समाजवादी नेतृत्व और अल्पसंख्यक राष्ट्रवादी भागीदारी के बीच सेतु-निर्माण में निहित है।

मुख्य शब्द: यूसुफ़ मेहर अली, भारत छोड़ो आंदोलन, 1942, कांग्रेस समाजवादी पार्टी, बंबई, युवा आंदोलन, साम्प्रदायिक सद्भाव, राष्ट्रीय आंदोलन

प्रस्तावना

अगस्त 1942 में बंबई के ग्वालिया टैंक मैदान से गांधी जी द्वारा दिया गया "करो या मरो" का आह्वान भारतीय इतिहास की निर्णायक घटनाओं में गिना जाता है।¹ 8 अगस्त 1942 को अखिल भारतीय कांग्रेस कमेटी ने 'भारत छोड़ो' प्रस्ताव पारित किया और अगले ही दिन, 9 अगस्त की भोर में, गांधी सहित कांग्रेस के शीर्ष नेतृत्व को गिरफ़्तार कर लिया गया। नेतृत्वविहीन जनता ने देश के अनेक भागों में स्वतःस्फूर्त और संगठित, दोनों रूपों में प्रतिरोध किया।²

इस आंदोलन के अध्ययन में प्रायः दो प्रवृत्तियाँ मिलती हैं। पहली, शीर्ष नेतृत्व-केंद्रित व्याख्या; दूसरी, 'नीचे से इतिहास' की दृष्टि, जो किसानों, श्रमिकों, विद्यार्थियों और स्थानीय समुदायों की भूमिका पर बल देती है।³ इन दोनों के बीच एक तीसरा स्तर भी है: मध्यवर्ती नेतृत्व, यानी वे संगठनकर्ता, पत्रकार, नगरपालिका प्रतिनिधि और युवा नेता, जिन्होंने विचारों को संगठन और संगठन को आंदोलन में बदला। यूसुफ़ मेहर अली इसी मध्यवर्ती किंतु महत्वपूर्ण श्रेणी के प्रतिनिधि व्यक्तित्व हैं।

मेहर अली का नाम सामान्यतः दो नारों से जुड़ा बताया जाता है: 1928 में साइमन आयोग के विरोध में "साइमन गो बैक" और 1942 में "क़िट इंडिया"। इनमें पहले नारे का श्रेय उन्हें इतिहासकारों ने भी दिया है, जबकि दूसरे के संबंध में गंभीर प्रश्न उठाए

¹"भारत छोड़ो, 1942", 'गांधी कम्स अलाइव', मणि भवन गांधी संग्रहालय, मुंबई, <https://gandhi-manibhavan.org/gandhi-comes-alive/quit-india.html> (अभिगमन: 7 अक्टूबर 2026)। गांधी के भाषण के पाठ के लिए द्रष्टव्य: एंथनी जे. पारेल (संपा.), *गांधी: 'हिंद स्वराज' तथा अन्य लेखन* (कैम्ब्रिज: कैम्ब्रिज यूनिवर्सिटी प्रेस, 1997), "गांधी का 'भारत छोड़ो' भाषण, 1942"।

²द्रष्टव्य: फ्रांसिस जी. हचिन्स, *स्वतःस्फूर्त क्रांति: भारत छोड़ो आंदोलन* (दिल्ली: मनोहर, 1971)। आंदोलन की स्वतःस्फूर्तता पर हचिन्स के तर्क पर इस आलेख के खंड 8 में भी विचार किया गया है।

³ज्ञानेंद्र पांडेय (संपा.), *1942 में भारतीय राष्ट्र* (कलकत्ता: के. पी. बागची एंड कंपनी, 1988); क्षेत्रवार अध्ययनों के लिए।

गए हैं।⁴ परंतु यदि उनके योगदान को केवल नारों तक सीमित कर दिया जाए, तो उनकी वास्तविक ऐतिहासिक भूमिका ओझल हो जाती है। यह आलेख इसी सीमा को पार करने का प्रयास है।

1. 1942 से पूर्व मेहर अली की राजनीतिक यात्रा ने भारत छोड़ो आंदोलन की पृष्ठभूमि निर्माण में क्या योगदान दिया?
2. 'भारत छोड़ो' नारे से उनके संबंध के दावे का साक्ष्य-आधार क्या है और उसकी सीमाएँ क्या हैं?
3. आंदोलन के समय बंबई के महापौर और समाजवादी नेता के रूप में उनकी स्थिति का क्या महत्त्व था?
4. उनकी वैचारिक विरासत, विशेषतः साम्प्रदायिक सद्भाव के संदर्भ में, आंदोलन के व्यापक अर्थ को कैसे समृद्ध करती है?

यह अध्ययन ऐतिहासिक-विश्लेषणात्मक पद्धति पर आधारित है। प्राथमिक स्रोतों में मेहर अली द्वारा लिखित एवं संपादित प्रकाशित कृतियाँ तथा 'ट्रांसफ़र ऑफ़ पावर' दस्तावेज़ों का संकलन हैं; द्वितीयक स्रोतों में राष्ट्रीय आंदोलन के प्रतिष्ठित इतिहास-ग्रंथ, मेहर अली की जीवनी तथा उन पर प्रकाशित स्मृति-लेख हैं।

भारत छोड़ो आंदोलन पर मौलिक कार्य फ्रांसिस हचिन्स की स्पॉन्टेनियस रिवोल्यूशन है, जो आंदोलन को बड़ी हद तक स्वतःस्फूर्त मानते हुए कांग्रेस नेतृत्व की भूमिका की सीमाओं को रेखांकित करती है। ज़ानेदर पांडेय संपादित द इंडियन नेशन इन 1942, क्षेत्रीय विविधताओं का विश्लेषण करती है। सुमित सरकार और बिपन चंद्र एवं अन्य के सर्वेक्षणात्मक ग्रंथ तथा जूडिथ ब्राउन का अध्ययन आंदोलन को राष्ट्रीय संघर्ष की शृंखला में रखते हैं। कांग्रेस समाजवादी पार्टी के संदर्भ में अशोक मेहता और ओवरस्ट्रीट एवं विंडमिलर महत्वपूर्ण हैं।⁵

मेहर अली पर सबसे महत्वपूर्ण जीवनी मधु दंडवते की यूसुफ़ मेहर अली : क्वेस्ट फॉर न्यू हॉरिज़ॉन्स है।⁶ उनके जन्म-शताब्दी वर्ष पर *फ्रीडम फ़र्स्ट* अंक में जी. एस. भार्गव का स्मृति-लेख तथा रामचंद्र गुहा का 2025 का आलेख भी उपयोगी हैं।⁷ मेहर अली की अपनी रचनाओं में लीडर्स ऑफ़ इंडिया और उनके द्वारा संपादित '*क्विट इंडिया*' विशेष उल्लेखनीय हैं। फिर भी, अभिलेखागार-आधारित एक समेकित शोध-कार्य का अभाव स्पष्ट है, और यह आलेख उस रिक्ति को आंशिक रूप से भरने का प्रयत्न है।

यूसुफ़ जाफ़र मेहर अली का जन्म बंबई में 1903 में एक संपन्न व्यापारी परिवार में हुआ। उनकी जन्म-तिथि प्रायः 23 सितंबर 1903 बताई जाती है, यद्यपि कुछ स्रोतों में भिन्न तिथि भी मिलती है।⁸ उनका परिवार संपन्न और परंपरागत रूप से ब्रिटिश-

⁴रामचंद्र गुहा, "यूसुफ़ मेहर अली का स्मरण: मुंबई के मुस्लिम समाजवादी महापौर", *स्कॉल इन*, 13 जुलाई 2025 (मूलतः *द टेलीग्राफ़* में प्रकाशित), <https://scroll.in/article/1084434> (अभिगमन: 7 अक्टूबर 2026)। गुहा के अनुसार 'साइमन गो बैक' का श्रेय निश्चय ही मेहर अली को जाता है, जबकि 'क्विट इंडिया' का श्रेय गलत आरोपण हो सकता है।

⁵सुमित सरकार, *आधुनिक भारत 1885-1947* (दिल्ली: मैकमिलन, 1983); बिपन चंद्र एवं अन्य, *भारत का स्वतंत्रता संघर्ष* (नई दिल्ली: पेंगुइन, 1989); जूडिथ एम. ब्राउन, *आधुनिक भारत: एक एशियाई लोकतंत्र की उत्पत्ति* (ऑक्सफ़ोर्ड: ऑक्सफ़ोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस, 1985); अशोक मेहता, *भारत का राजनीतिक मानस* (बंबई: सोशलिस्ट पार्टी, 1952); जीन डी. ओवरस्ट्रीट एवं मार्शल विंडमिलर, *भारत में साम्यवाद* (बर्कले: यूनिवर्सिटी ऑफ़ कैलिफ़ोर्निया प्रेस, 1959)। सामान्य संदर्भ हेतु ये सभी द्रष्टव्य हैं।

⁶मधु दंडवते, *यूसुफ़ मेहर अली: नए क्षितिजों की खोज* (नई दिल्ली: नेशनल बुक ट्रस्ट, 1986)।

⁷जी. एस. भार्गव, "सर्वोत्तम स्वतंत्रता-सेनानी", *फ्रीडम फ़र्स्ट*, अंक 460 (जनवरी-मार्च 2004), मुंबई: इंडियन कमेटी फ़ॉर कल्चरल फ्रीडम। अंक का ऑनलाइन विवरण: <https://indianliberals.in/primary-works/ff460/> (अभिगमन: 7 अक्टूबर 2026)। यह आलेख मेहर अली की जन्म-शताब्दी पर प्रकाशित हुआ था।

⁸जन्म-तिथि 23 सितंबर 1903 सामान्यतः उद्धृत की जाती है (द्रष्टव्य: विकिपीडिया, "यूसुफ़ मेहर अली", अभिगमन 7 अक्टूबर 2026); कुछ ऑनलाइन लेखों में 3 सितंबर भी मिलता है। दंडवते की जीवनी से इसकी पुष्टि वांछनीय है। गुहा केवल 1903 में जन्म का उल्लेख करते हैं।

समर्थक माना जाता था, इसलिए युवा यूसुफ़ को परिवार में विद्रोही की दृष्टि से देखा गया।⁹ उनकी शिक्षा बंबई के बरडा हाई स्कूल और एल्फ़िन्स्टन कॉलेज में हुई, जहाँ वे वाद-विवाद के कुशल वक्ता के रूप में प्रसिद्ध हुए। उन्होंने विधि की उपाधि भी ली, किंतु राजनीतिक विचारों के कारण उन्हें वकालत की सनद नहीं मिली।¹⁰

बीसवीं सदी के तीसरे दशक का बंबई मात्र व्यावसायिक राजधानी नहीं था; वह श्रमिक आंदोलनों, पत्रकारिता, सामाजिक सुधार और उग्र राष्ट्रवाद का भी केंद्र था। इसी वातावरण में उनकी राजनीतिक चेतना विकसित हुई और उनका आरंभिक राजनीतिक प्रयोग युवाओं के संगठन के रूप में सामने आया।

1928 में उन्होंने बंबई में यूथ लीग की स्थापना की और 1929 में बंबई में अखिल भारतीय युवा सम्मेलन का आयोजन किया; वे वेंगाई नामक मासिक पत्रिका के संपादक भी रहे।¹¹ उसी वर्ष साइमन आयोग, जिसमें कोई भारतीय सदस्य नहीं था, भारत पहुँचा और व्यापक विरोध उठ खड़ा हुआ। रामचंद्र गुहा के अनुसार "साइमन गो बैक" नारा मेहर अली की सूझ थी।¹² भार्गव के विवरण के अनुसार बंबई में आयोग के विरोध में निकले जुलूस पर, जिसमें यूथ लीग अग्रणी थी, पुलिस की लाठियाँ चलीं।¹³ डंडवते भी इस प्रसंग को रेखांकित करते हैं कि मेहर अली और उनके साथियों ने साइमन-विरोधी प्रदर्शनों से नमक सत्याग्रह की भूमि तैयार करने में योगदान दिया।¹⁴

यूथ लीग की गतिविधियों का महत्त्व नारे से कहीं अधिक व्यापक था। इसने (क) विद्यार्थियों और युवा पेशेवरों को संगठित राजनीति से जोड़ा, (ख) जनसभाओं, जुलूसों और बहिष्कार जैसे रूपों से जन-प्रदर्शन की शैली विकसित की, और (ग) कांग्रेस के भीतर एक अधिक रैडिकल युवा-धारा को आकार दिया। यही अनुभव आगे चलकर 1942 में बंबई की नगरीय लामबंदी का आधार बना।

1930 के नमक सत्याग्रह में मेहर अली को जेल जाना पड़ा।¹⁵ 1932 में सविनय अवज्ञा के दौरान वे फिर गिरफ़्तार हुए और नासिक केंद्रीय कारागार में जयप्रकाश नारायण तथा मीनू मसानी के साथ रहे। मसानी की जीवनी-प्रविष्टि के अनुसार इसी कारावास में इन तीनों ने उस संगठन की नींव रखी जो आगे चलकर कांग्रेस समाजवादी पार्टी बना।¹⁶ भार्गव के अनुसार मेहर अली 1930, 1932 और 1940 में गिरफ़्तार हुए।¹⁷

1934 में कांग्रेस समाजवादी पार्टी का गठन हुआ। गुहा के शब्दों में मेहर अली इसके सबसे मुखर नेताओं में थे; उन्होंने 1930 के दशक में देशभर में समाजवाद का प्रचार किया तथा यूरोप और अमेरिका की यात्राएँ करके लोकतांत्रिक समाजवादियों से संपर्क बनाए।¹⁸ नेहरू अभिलेखागार की जीवनी-प्रविष्टि के अनुसार वे 1939 में के महासचिव बने और 1941 में अखिल भारतीय विद्यार्थी सम्मेलन की अध्यक्षता की।¹⁹

⁹ भार्गव, "सर्वोत्तम स्वतंत्रता-सेनानी" (2004)।

¹⁰ गुहा (2025)। भार्गव के अनुसार उच्च न्यायालय ने राजनीतिक कारणों से उन्हें वकील की सनद नहीं दी (भार्गव, 2004)।

¹¹ "यूसुफ़ मेहर अली", नेहरू अभिलेखागार (नेहरू स्मारक संग्रहालय एवं पुस्तकालय), <https://nehruarchive.in/people/yusuf-meherally> (अभिगमन: 7 अक्टूबर 2026)। प्रविष्टि में यूथ लीग की स्थापना का वर्ष छपाई की त्रुटि के कारण अस्पष्ट है, किंतु संदर्भ और अन्य स्रोतों (गुहा, भार्गव) से यह 1928 ही बैठता है।

¹² गुहा (2025)।

¹³ भार्गव (2004)। भार्गव के विवरण में आयोग-विरोधी बंदरगाह-मार्च पर लाठी-चार्ज का उल्लेख है।

¹⁴ दंडवते (1986), प्रस्तावना के उद्धरण के आधार पर; जीवनी का यह अंश प्रकाशक की ऑनलाइन पुस्तक-सूचना में उद्धृत है। पृष्ठ-संख्या मूल पुस्तक से जोड़ें।

¹⁵ गुहा (2025)।

¹⁶ "एम. आर. मसानी", कॉन्स्टिट्यूशन ऑफ़ इंडिया.नेट, https://www.constitutionofindia.net/constituent_assembly_members/m_r_masani (अभिगमन: 7 अक्टूबर 2026)।

¹⁷ भार्गव (2004)।

¹⁸ गुहा (2025)।

¹⁹ नेहरू अभिलेखागार, "यूसुफ़ मेहर अली" (अभिगमन: 7 अक्टूबर 2026)।

कांग्रेस समाजवादी पार्टी का मूल सूत्र यह था कि राष्ट्रीय स्वतंत्रता का संघर्ष और सामाजिक-आर्थिक न्याय का संघर्ष परस्पर अलग नहीं हैं, और साम्राज्यवाद-विरोधी आंदोलन को कांग्रेस के भीतर रहकर अधिक जन-आधारित, किसान-मज़दूर-समर्थक बनाया जाना चाहिए।²⁰ मेहर अली के समाजवाद की एक विशिष्टता उसका गांधीवादी नैतिक आधार थी। अमेरिकी इतिहासकार बर्ट्रेंड वॉल्फ़ के, जिनसे मेहर अली की मित्रता 1930 के दशक के मध्य में हुई, एक निबंध के आधार पर गुहा बताते हैं कि वॉल्फ़ ने कांग्रेस समाजवादी पार्टी के मानवीय स्वरूप का श्रेय गांधी के प्रभाव को दिया, जिसने इसे साम्यवादियों की नैतिक विकृतियों से बचाए रखा।²¹ यह समाजवादी पक्ष 1942 में इसलिए महत्वपूर्ण बना कि आंदोलन के भूमिगत संचालन में समाजवादी नेता अग्रणी रहे।

द्वितीय विश्वयुद्ध में भारत को उसकी सहमति के बिना युद्ध में झोंक दिया गया था, जिससे राष्ट्रवादी असंतोष बढ़ा। जापान की तीव्र सैन्य प्रगति और दक्षिण-पूर्व एशिया में ब्रिटिश पराजयों ने भारत पर आक्रमण की आशंका और आर्थिक संकट (मूल्य-वृद्धि, चावल की कमी, 'डिनायल पॉलिसी') को बढ़ाया। मार्च-अप्रैल 1942 में आए क्रिप्स मिशन के प्रस्तावों में युद्धोत्तर डोमिनियन स्थिति का वादा तो था, पर तत्काल सत्ता-हस्तांतरण नहीं था और प्रांतों के 'अलग होने' के विकल्प का संकेत भी था। कांग्रेस ने इन्हें अपर्याप्त माना और मिशन विफल रहा।²²

इसके पश्चात गांधी जी ने अंग्रेजों की 'व्यवस्थित वापसी' की माँग को प्रखर रूप से रखना शुरू किया; मई 1942 में उन्होंने कहा कि अंग्रेज़ भारत को ईश्वर के भरोसे छोड़ दें, और यह न हो तो अराजकता के भरोसे।²³ 14 जुलाई 1942 को वर्धा में कांग्रेस कार्यसमिति ने भारत में ब्रिटिश शासन के तत्काल अंत की माँग का प्रस्ताव पारित किया, और अगस्त के पहले सप्ताह में बंबई में ऑल इंडिया कांग्रेस कमिटी अधिवेशन हुआ।²⁴ अधिवेशन से पहले और उसके दौरान बंबई की स्थानीय व्यवस्था, जन-समर्थन और प्रचार-तंत्र में कांग्रेस के स्थानीय नेताओं की भूमिका निर्णायक थी; इस संदर्भ में मेहर अली की स्थिति इसलिए महत्वपूर्ण थी कि वे उस समय नगर के महापौर थे।

लोकप्रिय स्मृति में यह कहा जाता है कि गांधी जी को आंदोलन के लिए एक ऐसे नारे की आवश्यकता थी जो संक्षिप्त, तीखा और जनता को तुरंत समझ आने वाला हो, और मेहर अली ने 'क्विट इंडिया' सुझाया जो गांधी जी को पसंद आया। गांधी स्मारक निधि से जुड़े मणि भवन, मुंबई की सामग्री में भी यही परंपरा दर्ज है: उसमें कहा गया है कि नारे पर गांधी की साथियों से चर्चा हुई, मेहर अली ने 'क्विट इंडिया' अंकित एक वस्तु उन्हें भेंट की और गांधी ने 'आमीन' कहकर स्वीकृति दी।²⁵ आधुनिक लोकप्रिय विवरणों में इस प्रसंग का स्थान और समय अलग-अलग मिलता है। कहीं 14 जुलाई 1942 की वर्धा-बैठक बताई गई है तो कहीं बंबई की किसी बैठक का उल्लेख है।²⁶

²⁰द्रष्टव्य: ओवरस्ट्रीट एवं विंडमिलर (1959); मेहता (1952)।

²¹गुहा (2025), जिसमें बर्ट्रेंड डी. वॉल्फ़ के निबंध "गांधी बनाम लेनिन" का हवाला है। वॉल्फ़ का मूल पाठ इस आलेख में प्रत्यक्ष रूप से नहीं देखा गया है।

²²क्रिप्स मिशन के दस्तावेजों के लिए: निकोलस मैन्सर्ग (संपा.), *सत्ता-हस्तांतरण 1942-7, खंड I: क्रिप्स मिशन, जनवरी-अप्रैल 1942* (लंदन: HMSO, 1970)। 'भारत छोड़ो' के दस्तावेजों के लिए: खंड II, *'भारत छोड़ो, 30 अप्रैल-21 सितंबर 1942* (लंदन: HMSO, 1971)। सामान्य विश्लेषण: ब्राउन (1985); चंद्र एवं अन्य (1989)।

²³मणि भवन, "भारत छोड़ो, 1942" (अभिगमन: 7 अक्टूबर 2026)।

²⁴वही। कार्यसमिति के प्रस्ताव की तिथि 14 जुलाई 1942 इसी स्रोत में दी गई है।

²⁵वही। मणि भवन की वेबसाइट के पाठ में भेंट की गई वस्तु का वर्णन अस्पष्ट है, इसलिए यहाँ उसका स्वरूप नहीं बताया गया।

²⁶उदाहरणार्थ, विकिपीडिया (प्रविष्टि "यूसुफ़ मेहर अली") 14 जुलाई 1942 और वर्धा का उल्लेख करती है, जबकि अन्य लोकप्रिय लेख (जैसे mpositive.in की टिप्पणी) बंबई की बैठक बताते हैं। विवरणों में यह अंतर दावे के उत्तरकालीन स्वरूप का संकेत है।

इस प्रसंग का सबसे ठोस प्रलेखित पक्ष प्रकाशन से जुड़ा है। मेहर अली के प्रकाशन-गृह पद्मा पब्लिकेशंस, बंबई ने 1942 में क्विट शीर्षक शीर्षक से गांधी के लेखों का संकलन प्रकाशित किया, जिसके संपादकों में मेहर अली का नाम दर्ज है।²⁷ मधु दंडवते के अनुसार यह पुस्तिका गांधी के आशीर्वाद से अगस्त 1942 की पूर्व-संध्या पर छपी।²⁸ मणि भवन के अभिलेख के हवाले से गुहा लिखते हैं कि सितंबर 1942 में सी आई डी ने पद्मा प्रकाशन के परिसर पर इस पुस्तिका की प्रतियों के लिए छापा मारा।²⁹ ये तथ्य बताते हैं कि मेहर अली ने नारे को छापे हुए रूप में जन-जन तक पहुँचाने में सक्रिय भूमिका निभाई और औपनिवेशिक सत्ता इस प्रचार-साहित्य को खतरनाक मानती थी।

नारे की उत्पत्ति के दावे का मूल्यांकन तीन स्तरों पर आवश्यक है। रामचंद्र गुहा ने 2025 में लिखा कि मेहर अली द्वारा 'क्विट इंडिया' गढ़े जाने की बात लोक-कथा हो सकती है। राजनीतिक नारे प्रायः किसी एक क्षण में एक व्यक्ति की उपज नहीं होते; वे चर्चा, मसौदा-लेखन और जन-स्वीकृति की प्रक्रिया में आकार लेते हैं। गांधी की अपनी भाषा में अंग्रेज़ों की 'वापसी' की माँग मई-जुलाई 1942 में स्पष्ट रूप से मुखर थी, और 'क्विट इंडिया' जैसा वाक्यांश उसी भाषा-परिवेश में सहज रूप से उभरता है। मेहर अली का नाम इस नारे से लोक-स्मृति में स्थायी रूप से जुड़ा है। जो प्रमाणित है, वह नारे को प्रकाशन के माध्यम से लोकप्रिय बनाने में उनका योगदान है।

अप्रैल 1942 में मेहर अली बंबई महानगरपालिका के महापौर चुने गए और उनका कार्यकाल 1942-43 रहा।³⁰ यह तथ्य अपने आप में प्रतीकात्मक था। एक ओर वे उपनिवेशी नगरीय संस्था में निर्वाचित राष्ट्रवादी प्रतिनिधि थे; दूसरी ओर वे ऐसे नेता थे जिन्हें कांग्रेस ने नगर के शीर्ष नागरिक पद पर प्रतिष्ठित किया। गुहा बताते हैं कि बंबई में 1934 से 1963 के बीच छह मुस्लिम महापौर हुए और मेहर अली उन्हीं में थे।³¹ उस दौर में, जब मुस्लिम लीग 'द्वि-राष्ट्र सिद्धांत' को मुखर कर रही थी, यह तथ्य कांग्रेस के समावेशी दावे की व्यावहारिक पुष्टि के रूप में भी देखा जा सकता है।

महापौर के रूप में उनकी भूमिका के दो प्रसंग उल्लेखनीय हैं। पहला, अगस्त 1942 में ऑल इंडिया कांग्रेस कमिटी अधिवेशन के लिए बंबई पहुँचे गांधी का रेलवे स्टेशन पर औपचारिक स्वागत महापौर के रूप में उन्हीं को करना पड़ा।³² दूसरा, भार्गव के अनुसार उन्होंने सरकार की वायु-हमला-निरोधक योजना के लिए धन देने से इनकार किया, यह तर्क देते हुए कि बर्मा और मलाया से ब्रिटिश वापसी के बाद जनता को अंग्रेज़ों द्वारा भारत की रक्षा करने पर विश्वास नहीं रहा।³³ यह प्रसंग बताता है कि महापौर का पद उनके लिए केवल प्रशासनिक नहीं, बल्कि राजनीतिक मंच भी था।

महापौर के अधिकार औपनिवेशिक कानून के अंतर्गत सीमित थे। फिर भी बंबई जैसे औद्योगिक, बंदरगाह और संचार-केंद्र में इस पद की सार्वजनिक प्रतिष्ठा स्वयं एक नैतिक पूँजी थी। यह ध्यान रखना चाहिए कि महापौर के रूप में उनके प्रशासनिक निर्णयों और सरकार के साथ टकराव के सूक्ष्म विवरणों का अभिलेखीय अध्ययन अभी अपेक्षित है। बंबई महानगरपालिका की कार्यवाही-पुस्तिकाएँ तथा महाराष्ट्र राज्य अभिलेखागार इसके लिए उपयोगी स्रोत हो सकते हैं।

7-8 अगस्त को बंबई के ग्वालिया टैंक मैदान में ऑल इंडिया कांग्रेस कमिटी अधिवेशन हुआ। 8 अगस्त की देर शाम 'भारत छोड़ो' प्रस्ताव पारित हुआ और गांधी जी ने "करो या मरो" का आह्वान किया। 9 अगस्त की भोर में गांधी, नेहरू, पटेल, आज़ाद

²⁷ एम. के. गांधी, *भारत छोड़ो* (संपा. यूसुफ़ मेहर अली एवं अन्य) (बंबई: पद्मा पब्लिकेशंस, 1942), 80 पृष्ठ। प्रकाशन-सूचना पुस्तक-विक्रेता की सूची पर आधारित है; मूल प्रति का पृष्ठांकन देखकर सत्यापन वांछनीय है।

²⁸ दंडवते (1986), जैसा गुहा (2025) में उद्धृत।

²⁹ गुहा (2025), जिसमें मणि भवन, मुंबई की सामग्री का हवाला है।

³⁰ गुहा (2025); महापौर-काल के लिए: नेहरू अभिलेखागार, "यूसुफ़ मेहर अली" (1942-43)।

³¹ गुहा (2025)।

³² गुहा (2025)।

³³ भार्गव (2004)। यह विवरण *फ्रीडम फ़र्स्ट* के उक्त अंक के ऑनलाइन सारांश से लिया गया है; मूल पीडीएफ़ (archive.indianliberals.in) से उद्धरण का मिलान आवश्यक है।

सहित शीर्ष नेताओं को गिरफ़्तार कर लिया गया और कांग्रेस को गैरकानूनी घोषित कर दिया गया।³⁴ गांधी को पुणे के आगा ख़ाँ पैलेस में रखा गया, जहाँ उनके सचिव महादेव देसाई का 15 अगस्त 1942 को निधन हुआ।³⁵

इन परिस्थितियों में आंदोलन के संचालन का भार द्वितीय पंक्ति के नेताओं पर आ गया। यह वही पंक्ति थी जिसमें समाजवादी नेता, जैसे जयप्रकाश नारायण, राम मनोहर लोहिया, अरुणा आसफ़ अली, अच्युत पटवर्धन और अशोक मेहता, प्रमुख थे। बंबई में हड़तालों, सभाओं और पुलिस-टकराव के साथ भूमिगत गतिविधियाँ भी चलीं, जिनका प्रसिद्ध उदाहरण उषा मेहता और उनके साथियों का गुप्त 'कांग्रेस रेडियो' है, जिसका प्रसारण अगस्त 1942 के मध्य से शुरू हुआ।³⁶

मेहर अली को भी इसी दौर में सरकारी दमन का सामना करना पड़ा। उनकी गिरफ़्तारी की तिथि और परिस्थितियों के बारे में स्रोत एकमत नहीं हैं। कुछ लोकप्रिय विवरणों में उन्हें 9 अगस्त 1942 को गांधी के साथ गिरफ़्तार बताया गया है, जबकि भार्गव के अनुसार उन्हें अगस्त से ठीक पहले पुणे में आयोजित कांग्रेस सोशलिस्ट पार्टी शिविर के दौरान पकड़ा गया।³⁷ गुहा के अनुसार उनकी जेल-डायरी से स्पष्ट होता है कि 1942 में एक कारावास-अवधि उन्होंने लाहौर की जेल में बिताई।³⁸ अतः गिरफ़्तारी और रिहाई की सटीक तिथियों का निर्धारण बंबई प्रेसीडेंसी के गृह विभाग की फ़ाइलों से ही संभव होगा, और यह आलेख इस प्रश्न को खुला रखता है।

इतना स्पष्ट है कि लंबे कारावास का उनके स्वास्थ्य पर गंभीर प्रभाव पड़ा। कुछ विवरण उनके हृदय-रोग को 1942 के कारावास से जोड़ते हैं, जबकि भार्गव 1928 में लगी लाठी की चोट और 1943 में पड़े दौरे का उल्लेख करते हैं।³⁹ उस समय निर्वाचित महापौर जैसे सम्मानित नागरिक पदाधिकारी का गिरफ़्तार होना दर्शाता है कि औपनिवेशिक राज्य ने आंदोलन को केवल 'कानून-व्यवस्था' का नहीं, बल्कि अपनी वैधता का संकट माना।

मेहर अली एक सक्रिय लेखक, संपादक और प्रकाशक थे। उनकी *Leaders of India* दो खंडों में तत्कालीन भारतीय नेताओं का परिचयात्मक चित्रण है, जिसके कई संस्करण निकले।⁴⁰ उन्होंने जयप्रकाश नारायण के घोषणा-पत्रों, भाषणों और लेखों का संकलन *Towards Struggle* भी संपादित किया, और उनकी एक अन्य कृति *अ ट्रिप टू पाकिस्तान* पाकिस्तान की माँग के सामाजिक-राजनीतिक आयामों को समझने का प्रयास है।⁴¹ उनके समकालीन समाजवादी साथियों अशोक मेहता और अच्युत पटवर्धन की पुस्तक *The Communal Triangle in India* (1942) भी उसी बौद्धिक वातावरण का परिचय देती है।⁴²

गुहा द्वारा उद्धृत वोल्फ़ के संस्मरण के अनुसार 1930 के दशक में मेहर अली ब्रिटिश उपनिवेशवाद की भयावहताओं के प्रति आक्रोश से भरे थे, पर 1946 की अपनी दूसरी अमेरिका-यात्रा में उन्होंने ब्रिटिश परंपरा में निहित नागरिक अधिकारों की सराहना की और यह तर्क दिया कि ब्रिटिश शासक दमन के समय भी असहज रहते थे, जबकि हिटलर या स्टालिन की जेलों में गांधी का विरोध पहले ही शब्द पर मिटा दिया जाता। मेहर अली के लिए गांधी की सीख यह थी कि बुराई से घृणा की जाए,

³⁴मणि भवन, "भारत छोड़ो, 1942"। द्रष्टव्य भी: ब्राउन (1985); चंद्र एवं अन्य (1989)।

³⁵जूडिथ एम. ब्राउन, *गांधी: आशा के बंदी* (न्यू हेवन: येल यूनिवर्सिटी प्रेस, 1989)।

³⁶उषा मेहता और 'कांग्रेस रेडियो' के लिए द्रष्टव्य: मणि भवन, "भारत छोड़ो, 1942", जिसमें उषा मेहता का उल्लेख है। प्रसारण की आरंभ-तिथि के लिए उषा ठक्कर एवं संध्या मेहता का अध्ययन देखें।

³⁷विकिपीडिया, "यूसुफ़ मेहर अली" (अभिगमन: 7 अक्टूबर 2026) 9 अगस्त 1942 की गिरफ़्तारी बताती है; भार्गव (2004) पुणे के CSP शिविर का उल्लेख करते हैं। दोनों विवरण द्वितीयक हैं और परस्पर मेल नहीं खाते।

³⁸गुहा (2025)।

³⁹विकिपीडिया, "यूसुफ़ मेहर अली"; भार्गव (2004)। निधन के चिकित्सा-कारणों पर स्रोत भिन्न हैं।

⁴⁰यूसुफ़ मेहर अली, *भारत के नेता* (बंबई: पद्मा पब्लिकेशंस, 1942)। दो खंडों और छह संस्करणों का उल्लेख भार्गव (2004) में है। 1946 के *संघर्ष की ओर* के पुस्तकालय-अभिलेख के अनुसार उसमें *भारत के नेता* के खंड 1 का एक अंश पुनर्मुद्रित है।

⁴¹यूसुफ़ मेहर अली (संपा.), *संघर्ष की ओर: जयप्रकाश नारायण के चयनित घोषणा-पत्र, भाषण एवं लेखन* (बंबई: पद्मा पब्लिकेशंस, 1946); यूसुफ़ मेहर अली, *पाकिस्तान की एक यात्रा* (बंबई: प्रकाशन-वर्ष सत्यापन-योग्य)।

⁴²अशोक मेहता एवं अच्युत पटवर्धन, *भारत में साम्प्रदायिक त्रिकोण* (इलाहाबाद: किताबिस्तान, 1942)।

लोगों से नहीं।⁴³ यह प्रसंग उनके समाजवाद के मानववादी, अहिंसक और लोकतांत्रिक स्वभाव को दर्शाता है। पटवर्धन ने उन्हें एक 'महान मानववादी' कहा, जिनमें संकीर्ण धार्मिक पहचान का स्थान नहीं था।⁴⁴

1942 साम्प्रदायिक राजनीति की दृष्टि से भी संवेदनशील वर्ष था। मुस्लिम लीग ने भारत छोड़ो आंदोलन से दूरी बनाई और आगे चलकर दिसंबर 1943 के कराची अधिवेशन में 'बाँटो और जाओ' का नारा अपनाया।⁴⁵ इसी पृष्ठभूमि में मुस्लिम पृष्ठभूमि के अनेक राष्ट्रवादी नेता, जैसे मौलाना आज़ाद और मेहर अली, आंदोलन में पूर्ण भागीदारी करते दिखाई देते हैं। भार्गव के अनुसार मेहर अली का मुहम्मद अली जिन्ना से पारिवारिक-संरक्षक जैसा संबंध था और राजनीतिक मतभेद के कारण उन्होंने जिन्ना से नाता तोड़ लिया।⁴⁶ मेहर अली का नेतृत्व इस अर्थ में महत्वपूर्ण था कि वह इस प्रश्न का व्यावहारिक उत्तर था: क्या 'मुस्लिम हित' का प्रतिनिधित्व केवल लीग करती है?

यहाँ यह भी स्वीकार करना होगा कि 1940 के दशक के मध्य तक राजनीतिक ध्रुवीकरण ने समावेशी राष्ट्रवाद की सीमाओं को उजागर किया। मेहर अली की चिंता, जो उनके पाकिस्तान-संबंधी लेखन में भी झलकती है, इसी बढ़ते विभाजन को समझने और उसे रोकने की चेष्टा थी।

मूल्यांकन

- *संगठनात्मक आधार-निर्माण*: यूथ लीग और कांग्रेस सोशलिस्ट पार्टी के माध्यम से उन्होंने 1942 के आंदोलन के लिए आवश्यक युवा और समाजवादी नेतृत्व तैयार करने में योगदान दिया।
- *प्रकाशन और संप्रेषण*: 'साइमन गो बैक' से जुड़ाव और 1942 में *Quit India* पुस्तिका का प्रकाशन दर्शाता है कि राजनीतिक संप्रेषण जन-आंदोलनों का अनिवार्य अंग है।
- *नगरीय नेतृत्व*: बंबई के महापौर के रूप में उन्होंने आंदोलन को नागरिक वैधता और संस्थागत प्रतिष्ठा प्रदान की।
- *समावेशी राष्ट्रवाद*: उन्होंने अल्पसंख्यक समुदाय के राष्ट्रवादी योगदान का प्रभावी उदाहरण प्रस्तुत किया।

सीमाएं -

- उनकी अपनी लेखन-सामग्री और निजी पत्राचार का सुव्यवस्थित संग्रह और प्रकाशन सीमित है, इसलिए मूल्यांकन परोक्ष स्रोतों पर अधिक निर्भर रहता है।
- 1942 में उनकी गिरफ्तारी, कारावास-स्थलों और रिहाई के तिथि-विवरण पर अभिलेख-आधारित स्पष्ट कालक्रम की आवश्यकता है।
- नारे की उत्पत्ति पर 'एकल-श्रेय' की प्रवृत्ति इतिहास की जटिलता को सरलीकृत कर सकती है।
- हचिन्स जैसे विद्वानों का तर्क है कि आंदोलन काफ़ी हद तक स्वतःस्फूर्त था। इस दृष्टि से किसी एक नेता के योगदान को अतिरंजित करना उचित नहीं होगा।

मेहर अली का निधन जुलाई 1950 में बंबई में हुआ, अर्थात् स्वतंत्रता के केवल तीन वर्ष बाद। उनकी मृत्यु-तिथि सामान्यतः 2 जुलाई 1950 बताई जाती है और आयु 46 वर्ष बैठती है, यद्यपि कुछ स्रोत 47 वर्ष लिखते हैं।⁴⁷ गुहा के अनुसार उनकी शवयात्रा

⁴³गुहा (2025), जिसमें बर्ट्रैंड डी. वोल्फ़ के संस्मरण का हवाला है।

⁴⁴अच्युत पटवर्धन की टिप्पणी, जो दंडवते की जीवनी की भूमिका में है, जैसा गुहा (2025) में उद्धृत।

⁴⁵द्रष्टव्य: सरकार (1983); चंद्र एवं अन्य (1989)। कराची अधिवेशन दिसंबर 1943 में हुआ था।

⁴⁶भार्गव (2004)। यह विवरण एकल, द्वितीयक स्रोत पर आधारित है और इसकी पुष्टि के लिए दंडवते (1986) से मिलान आवश्यक है।

⁴⁷मृत्यु-तिथि 2 जुलाई 1950 के लिए: विकिपीडिया, "यूसुफ़ मेहर अली"; मृत्यु का माह-वर्ष (जुलाई 1950) गुहा (2025) से भी पुष्ट है। भार्गव (2004) में आयु 47 वर्ष बताई गई है।

में रूढ़िवादी कांग्रेसी और उग्र समाजवादी साथ-साथ चले। कमलादेवी चट्टोपाध्याय जैसी साथियों ने उन्हें निर्भीक किंतु कोमल, त्याग को तत्पर किंतु स्नेह से भरा व्यक्ति बताया।⁴⁸ उनके नाम पर यूसुफ़ मेहर अली सेंटर की स्थापना हुई, जो नगरीय अध्ययन और सामाजिक कार्य से जुड़ा है।⁴⁹ इसके बावजूद लोकप्रिय स्मृति में उनका नाम प्रायः एक नारे तक सीमित रह जाता है। इसे 'विस्मृत नायकों' की उस व्यापक समस्या से जोड़कर देखा जा सकता है जिसमें मध्यवर्ती नेतृत्व और अल्पसंख्यक राष्ट्रवादी हाशिये पर चले जाते हैं।

निष्कर्ष

यूसुफ़ मेहर अली का भारत छोड़ो आंदोलन में योगदान तीन परतों में समझा जाना चाहिए। पहली परत उनकी दीर्घकालिक संगठनात्मक भूमिका है: बंबई यूथ लीग और कांग्रेस समाजवादी पार्टी के माध्यम से उन्होंने उस युवा, रैडिकल और समाजवादी नेतृत्व के निर्माण में योगदान दिया जिसने 1942 में निर्णायक भूमिका निभाई। दूसरी परत प्रकाशन और प्रतीकों की है: 'भारत छोड़ो' नारे के साथ उनका जुड़ाव लोक-स्मृति में स्थायी है, किंतु साक्ष्य की दृष्टि से जो प्रमाणित है वह गांधी के लेखों के संकलन *Quit India* का प्रकाशन और उसके प्रसार का प्रयास है, नारे के जनक होने का प्रत्यक्ष प्रमाण नहीं। तीसरी परत नैतिक एवं समावेशी राष्ट्रवाद की उनकी दृष्टि है, जिसमें अल्पसंख्यक पहचान और राष्ट्रीय आंदोलन में विरोध नहीं, बल्कि पूरकता का संबंध था।

मेहर अली पर शोध अभी प्रारंभिक अवस्था में है। भावी अध्ययनों को (क) बंबई महानगरपालिका और महाराष्ट्र राज्य अभिलेखागार की सामग्री, (ख) NMML में उपलब्ध CSP और ऑल इंडिया कांग्रेस कमिटी पत्राचार, (ग) हरिजन, बॉम्बे क्रॉनिकल सहित समकालीन अंग्रेज़ी, गुजराती, मराठी और उर्दू समाचार-पत्रों, तथा (घ) मौखिक इतिहास और संस्मरणों के आधार पर उनके योगदान का अधिक सटीक और बहुभाषिक मूल्यांकन करना चाहिए। ऐसा करने से न केवल एक विस्मृत व्यक्तित्व का न्यायपूर्ण पुनर्मूल्यांकन होगा, बल्कि भारत छोड़ो आंदोलन की उस बहुस्तरीय संरचना की भी बेहतर समझ बनेगी जिसमें जनता, मध्यवर्ती नेतृत्व और शीर्ष नेतृत्व परस्पर गुंथे हुए थे।

संदर्भ-ग्रंथ सूची :-

- गांधी, एम. के. (1942). *भारत छोड़ो* (संपा. यूसुफ़ मेहर अली एवं अन्य). बंबई: पद्मा पब्लिकेशंस।
- पारेल, एंथनी जे. (संपा.). (1997). *गांधी: 'हिंद स्वराज' तथा अन्य लेखन*, कैम्ब्रिज: कैम्ब्रिज यूनिवर्सिटी प्रेस।
- मेहर अली, यूसुफ़. (1942). *भारत के नेता*, बंबई: पद्मा पब्लिकेशंस।
- मेहर अली, यूसुफ़ (संपा.). (1946). *संघर्ष की ओर: जयप्रकाश नारायण के चयनित घोषणा-पत्र, भाषण एवं लेखन*, बंबई: पद्मा पब्लिकेशंस।
- मेहर अली, यूसुफ़. (तिथि अज्ञात). *पाकिस्तान की एक यात्रा*, बंबई।
- मैन्सर्ग, निकोलस (संपा.). (1970). *सत्ता-हस्तांतरण 1942-7, खंड I: क्रिप्स मिशन, जनवरी-अप्रैल 1942*, लंदन: हर मैजेस्टीज़ स्टेशनरी ऑफ़िस।
- मैन्सर्ग, निकोलस (संपा.). (1971). *सत्ता-हस्तांतरण 1942-7, खंड II: 'भारत छोड़ो', 30 अप्रैल-21 सितंबर 1942*, लंदन: हर मैजेस्टीज़ स्टेशनरी ऑफ़िस।
- ओवरस्ट्रीट, जीन डी. एवं विंडमिलर, मार्शल. (1959). *भारत में साम्यवाद*. बर्कले: यूनिवर्सिटी ऑफ़ कैलिफ़ोर्निया प्रेस।
- गुहा, रामचंद्र. (2025, 13 जुलाई). यूसुफ़ मेहर अली का स्मरण: मुंबई के मुस्लिम समाजवादी महापौर, *स्कॉल इन*.
<https://scroll.in/article/1084434>

⁴⁸गुहा (2025), जिसमें कमलादेवी चट्टोपाध्याय और पीटर अल्वारेस की श्रद्धांजलियाँ दंडवते की जीवनी से उद्धृत हैं।

⁴⁹गुहा (2025), जिसमें उनके नाम पर स्थापित नगरीय अध्ययन केंद्र का उल्लेख है।

- चंद्र, बिपन; मुखर्जी, मृदुला; मुखर्जी, आदित्य; पणिक्कर, के. एन.; महाजन, सुचेता. (1989). *भारत का स्वतंत्रता संघर्ष*, नई दिल्ली: पेंगुइन बुक्स।
- दंडवते, मधु. (1986). *यूसुफ़ मेहर अली: नए क्षितिजों की खोज*, नई दिल्ली: नेशनल बुक ट्रस्ट।
- पांडेय, ज्ञानेंद्र (संपा.). (1988). *1942 में भारतीय राष्ट्र*, कलकत्ता: के. पी. बागची एंड कंपनी।
- ब्राउन, जूडिथ एम. (1985). *आधुनिक भारत: एक एशियाई लोकतंत्र की उत्पत्ति*, ऑक्सफ़ोर्ड: ऑक्सफ़ोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस।
- ब्राउन, जूडिथ एम. (1989). *गांधी: आशा के बंदी*. न्यू हेवन: येल यूनिवर्सिटी प्रेस।
- भार्गव, जी. एस. (2004). सर्वोत्तम स्वतंत्रता-सेनानी , *फ्रीडम फ़र्स्ट*, अंक 460 (जनवरी-मार्च). मुंबई: इंडियन कमेटी फ़ॉर कल्चरल फ़्रीडम।
- मेहता, अशोक. (1952). *भारत का राजनीतिक मानस*, बंबई: सोशलिस्ट पार्टी।
- मेहता, अशोक एवं पटवर्धन, अच्युत. (1942). *भारत में साम्प्रदायिक त्रिकोण*, इलाहाबाद: किताबिस्तान।
- सरकार, सुमित. (1983). *आधुनिक भारत 1885-1947*, दिल्ली: मैकमिलन।
- हचिन्स, फ़्रांसिस जी. (1971). *स्वतःस्फूर्त क्रांति: भारत छोड़ो आंदोलन*, दिल्ली: मनोहर।
- कॉन्स्टिट्यूशन ऑफ़ इंडिया.नेट. *एम. आर. मसानी* (संविधान सभा सदस्य-परिचय)
- नेहरू अभिलेखागार (नेहरू स्मारक संग्रहालय एवं पुस्तकालय). *यूसुफ़ मेहर अली* (जीवन-परिचय प्रविष्टि)
- मणि भवन गांधी संग्रहालय, मुंबई. *भारत छोड़ो, 1942* ('गांधी कम्स अलाइव')
- <https://gandhi-manibhavan.org/gandhi-comes-alive/quit-india.html>